Name:- Anjali (assistant professor) TNATTC, Harigaon, Ara

Paper C 7(a) Physical science....

Methods of teaching...

ह्यूरिस्टिक विधि

ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic method) बाल केंद्रित शिक्षण विधि है। ... इस विधि में शिक्षक ऐसी गतिविधि को सम्मिलित करता है जिसमें विद्यार्थी स्वतंत्र रहकर कार्य करता है और सीखता है। ह्यूरिस्टिक शब्द ग्रीक भाषा से आया है जिसका अर्थ होता है 'खोज करना' इसमें विद्यार्थी स्वयं खोज करने के लिए उत्साहित होता है।

ह्यूरिस्टिक (Heuristic) शब्द यूनानी भाषा के Heurisco से बना है जिसका तात्पर्य है " मैं स्वयं खोज करता हूं " इस प्रकार स्पष्ट है कि ह्यूरिस्टिक विधि स्वयं खोज करके या अपने आप सीखने की विधि है। ह्यूरिस्टिक विधि को अन्वेषण विधि भी कहते हैं।

इस विधि के जन्मदाता हेनरी एडवर्ड आर्मस्ट्रांग को माना जाता है। ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic method) बाल केंद्रित शिक्षण विधि है। इस विधि में विद्यार्थी एक खोजकर्ता होता है। वह स्वयं खोज करके निरीक्षण और प्रयोग करता है और सीखता है

व्याख्यान विधि:

व्याख्यान विधि को लिक अंग्रेजी में lecture method कहते हैं। व्याख्यान विधि को प्रभुत्व वादी शिक्षण विधि की संज्ञा दी जाती है। व्याख्यान विधि शिक्षक केंद्रीय विधि है जिसमें विद्यार्थी केवल श्रोता होते हैं और इस विधि में विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करने के लिए शिक्षक प्रश्न विधि कभी प्रयोग करते हैं।

व्याख्यान विधि अंग्रेजी के 'Lecture Method' का हिंदी रूपांतरण है । Lecture का अर्थ किसी तथ्य , विषय को विस्तार से समझाना होता है। इस प्रकार व्याख्यान विधि में किसी तथ्य , विषय की व्याख्या की जाती है।

व्याख्यान विधि को शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि माना जाता है। व्याख्यान विधि को आदर्शवादी विचारधारा की देन मानी जाती है । वर्तमान समय में अभी भी यह शिक्षण विधि प्रचलन में है।

व्याख्यान विधि को प्रभुत्ववादी शिक्षण विधि माना जाता है। इस विधि में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है इसलिए इसे शिक्षक केंद्रित शिक्षण विधि मानी जाती है। यह विधि स्मृति स्तर (Memory Level) का शिक्षण अधिगम कराती है। सामाजिक विज्ञान में व्याख्यान विधि का प्रयोग सबसे अधिक होता है। व्याख्यान शिक्षण विधि में पाठ्य वस्तु एवं विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।

व्याख्यान विधि (Lecture Method) में शिक्षक की क्रियाशीलता अधिक रहती है। छात्र इस शिक्षण विधि में मात्र श्रोता बनकर रह जाता है। छात्रों के ध्यान को विषय वस्तु की ओर केंद्रित करने के लिए अध्यापक कभी-कभी प्रश्न प्रविधि की भी सहायता लेता है। व्याख्यान विधि में शिक्षक को अधिक परिश्रम करना होता है क्योंकि कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को व्याख्या की तैयारी करनी पड़ती है।

1) व्याख्यान विधि (Lecture Method) की विशेषताएं :-

a)व्याख्यान विधि मितव्ययी शिक्षण विधि मानी जाती है क्योंकि इसमें प्रयोग उपकरण व प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

b)अन्य विषयों के साथ आसानी से सह संबंध स्थापित किया जा सकता है।

c) इस शिक्षण विधि के द्वारा नवीन विषयों की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के लिए प्रेरणा मिलती है।

बालकों को मौलिक चिंतन की क्षमताओं के विकास का अवसर मिल पाता है।

d) इस शिक्षण विधि के द्वारा पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।

व्याख्यान विधि समय की बचत करती है ।

e) थोड़े समय में अधिक विषय वस्तु का बोध सुगमता से कराया जाता है।

f) इससे बालकों को ध्यान केंद्रित करने की आदत पड़ती है।

2) व्याख्यान विधि (Lecture Method) की सीमाएं :-

a) बालक की अपेक्षा अध्यापक को अधिक महत्व दिया जाता है । b) इस विधि में शिक्षक का एकाधिकार रहता है।

c)इस विधि द्वारा छात्रों के पृष्ठपोषण यानी फीडबैक प्रभावशाली ढंग से नहीं दिया जा सकता तथा अध्यापक को भी यह पता नहीं चल पाता किस सीमा तक वह अपने व्याख्यान में सफल हुआ है।

d) इस विधि द्वारा शिक्षण बिंदु पर संतुलित बल नहीं दिया जाता अकसर अध्यापक व्याख्यान विधि में मुख्य विषय से हटकर बातें करने लगते हैं।

e) व्याख्यान विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं में ही किया जा सकता है प्राथमिक कक्षाओं के लिए इसका कोई महत्व नहीं है।